J. N. MISHRA

श्रीमद्भगवद्गीता

सामान्य परिचय

~~अध्याय 2 श्लोक 3-25~~

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व से उद्धृत, भगवान पद्मनाभ के मुख से निःसृत समस्त संसार के लोक कल्याण के कार्यों में प्रवृत्त, संपूर्ण शास्त्रों का आधारभूत स्तंभ है। महाभारत के भीष्म पर्व में गीता को सर्वशास्त्रमयी गीता (भी. 43/2) महाभारत के रचयिता वेदव्यास ने कहा है गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्र-संग्रहैः। या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनी निःसृता:। महा. भी. पर्व. 43/1

संपूर्ण गीता 18 अध्यायों में विभक्त है

प्रथम अध्याय का नाम श्रीकृष्ण/अर्जुन संवाद है इसमें 47 श्लोक हैं। अर्जुन विषाद

द्वितीय अध्याय का नाम सांख्ययोग है। इसमें 72 श्लोक है।

तृतीय अध्याय का नाम- कर्मयोग है। 43 श्लोक है।

चतुर्थ अध्याय का नाम- ज्ञानकर्मसन्यासयोग है। 42 श्लोक है।

पंचम अध्याय का नाम- कर्मसन्यासयोग है 29 श्लोक है।

षष्ठ अध्याय का नाम आत्मसंयमयोग है। इसमे 47 श्लोक है।
सप्तम अध्याय का नाम ज्ञानविज्ञान योग है।
इसमे 30 श्लोक है।
अष्टम अध्याय का नाम अक्षरब्रह्मयोग है
इसमे 28 श्लोक है।
नवम अध्याय का नाम राजविद्याराजगुह्ययोग
है। 34 श्लोक है।
दशम अध्याय का नाम विभूतियोग है।
42 श्लोक है।
एकादश अध्याय का नाम विश्वरूपदर्शनयोग
है। 55 श्लोक है।
द्वादश अध्याय का नाम भक्तियोग है।
20 श्लोक है।
त्रयोदश अध्याय का नाम क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग
34 श्लोक है।
चतुर्दश अध्याय का नाम गुणत्रयविभागयोग
है। 27 श्लोक है।
पञ्चदश अध्याय पुरुषोत्तमयोग तथा 20 श्लोक
षोडश अध्याय का नाम दैवासुरसम्पद्विभाग
योग है। इसमे 24 श्लोक है।
सप्तदश अध्याय का नाम श्रद्धात्रयविभाग
योग है। 28 श्लोक है।
अष्टादश अध्याय मोक्षसन्यासयोग है। 78 श्लोक